भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर ने आठ जय गोपाल वर्मीकल्चर तकनीकी सात राज्यों में स्थानान्रण और उनके प्रतिनिधियों को पॉच दिन का प्रशिक्षण दिया

हमारे देश में लगभग 320 करोड़ टन जैविक कचरा और गोबर उत्पन्न होता है। देश के प्रत्येक गॉव और शहर में इसके वैज्ञानिक तरीके से निष्पादन की बहुत समस्या हैं। दूसरी तरफ खेती की भूमि की उर्वरता शक्ति दिन प्रति दिन कम हो रही है बरेली जिले की ऑवला तहसोल के मझगंवा और आलमपुर जफराबाद विकास खण्ड के 21 गॉवों के 500 से अधिक किसानों के खेती की मिट्टी की जॉच करने पर पता लगा कि उनके खेतों में 0.1 से 0.45 तक कार्बनिक पदार्थ की मात्रा रह गयी हैं। इसी प्रकार हरित कान्ति के बाद प्रत्येक राज्य की जमीन का स्वास्थ और उर्वरता शक्ति आवश्यक पौषक तत्व और कार्वनिक पदार्थ कम होने से कम हो रही है।

हमारे संस्थान ने जैविक कचरा और गोबर से दो माह में केंचुआ जैविक खाद बनाने की जय गोपाल वर्मीकल्चर स्वदेशी तकनीकी विकसित की है। जय गोपाल केंचुआ की प्रजाति 46^0 सेल्सीयस तापकम तक जीवित रहती है इसमें विदेशी केंचुओं की प्रजाति के मुकावले ताप सहन शील, प्रति सप्ताह अधिक कोकून तथा कोकून से अधिक बच्चे निकलने की क्षमता है। इस प्रजाति का केंचुआ जैविक खाद (वर्मीकास्ट) अन्य सभी केंचुओं की प्रजातियों से श्रेष्ठ होता है। इन विशेषताओं और वर्तमान में जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये हमारे संस्थान से देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्र, गौशालाओं, राज्य सस्कारों, भा.कृ.अ.प. के संस्थानों, किसानों, सेना की छावनियों, सेना की विभिन्न केन्द्र/इकाइयों, किसानों और उद्यमियों ने अब तक 70 से अधिक जय गोपाल वर्मीकल्चर तकनीकीयों खरीदी ह तथा प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वर्तमान में इस तकनीकी की कीमत रू0 59000/– रूपये ह।

इस बार सात राज्यों में गोविन्द वल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पन्तनगर, उधमसिंह नगर (उत्राखण्ड) कृषि विज्ञान केन्द्र पानी सागर, उत्तरी त्रिपुरा, कृषि प्रोद्यौगिकी अनुपयोगी शोध संस्थान, पटना, बिहार, गिर गौ जतन संस्थान, गौडल राजकोट, गुजरात, करिश्मा आरगेनिक, महासमुन्द, छत्तीसगढ़, छावनी, बरेली (उ0 प्र0), श्री मोहसिन अब्बास काजमी, गॉव अमेठिया सलेमपुर, काकोरी, लखनऊ और श्री अभिषेक हान्डा, प्रोग्रेस वर्क्स प्राइवेट लिमिटिड रजिस्टर्ड कार्यालय, डी–18/डी आहूलवालिया एक्सटेन्सन गॉवः फतेहपुर सेक्टर–20 पंचकुला हरियाणा ने खरीदी है। जय गोपाल तकनीकी स्थानान्तरण की प्रकिया में इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों को टीम जिसमें एक पर्यवेक्षक तथा एक से चार तक मजदूरों को पॉच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस अवधि में केंचुऑ की कचरा खाने वाली प्रजातियॉ के गुण तथा पहचान, केंचुआ पालन के लिये वर्मी टैंक और आवास का निर्माण, केंचुओं का आहार बनाने की विधियों, कंचुआ जैविक तरल खाद और केंचुआ जैविक खाद के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से कक्षा में और प्रयोग कराके प्रशिक्षित किया है। सभी प्रशिक्षुओं को वर्मीकम्पोस्ट की फील्ड यूनिट तथा इसका सब्जीयों और गुलाब में प्रयोग के

प्रदर्शन भी दिखाये गये। प्रशिक्षण क अन्तिम दिन जौनपुर जिले के 50 किसानों को भी जय गोपाल वर्मीकल्चर और जैविक खाद बनाने के प्रदशनों को दिखाया गया। सभी प्रशिक्षुओं ने स्वंय से केंचुआ जैविक खाद बनाने वर्मीकल्चर उत्पादन आदि के प्रयोग किये। प्रशिक्षण के पाचवें दिन सभी को जय गोपाल वर्मीकल्चर बैग में पैक करके सौंपा गया। डा0 महेश चन्द्र, प्रधान वैज्ञानिक ने सभी प्रशिक्षुओं को केंचुआ पालन एवं केंचुआ जैविक खाद बनाने के क्षेत्र में कैसे उद्यमिता विकास किया जाये इस विषय पर विस्तृत से बताया गया। सभी प्रशिक्षुओं को के.प.अ.स., इज्जतनगर में गिरो तकनीकी पार्क में पिछवाड़ा मुर्गीपालन, केंचुआ पालन सहजन/बरसीम और जैविक कचरे का प्रबन्धन के माडल का आर्थिक विशेषण बताया गया जिससे वह मुर्गीयों में आहार को कम करके केंचुआ और सहजन/बरसीम की खिलाई करके कैसे खर्चा को मुर्गीपालन पर कम किया जा सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यकम में कुल 72 किसान/उद्यमी/गोपालक/वैज्ञानिक/वस्तु विषय विशेषयज्ञों ने भाग लिया।

डा0 रणवीर सिंह
जय गोपाल वर्मीकल्चर तकनीकी जनक
प्रधान अन्वेषक
केंचुआ जैवतकनीकी परियोजना
पशु आनुवंशिकी विभाग